



ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 21 अंक 5

कुल पृष्ठ-8

18 से 24 जून, 2026

दयानन्दाब्द 202

सृष्टि सम्वत् 1960853127

सम्वत् 2083

आ.कृ-07

युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 20वीं पुण्यतिथि के अवसर पर
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में

सात दिवसीय राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर सफलता पूर्वक हुआ सम्पन्न

शिविर में पांच सौ कन्याओं ने भाग लिया

शिविर के समापन समारोह में युवा संकल्प एवं सम्मान समारोह का हुआ भव्य आयोजन

आर्य संन्यासी स्वामी सूर्यवेश, आर्य जगत् की महान् विदुषी डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा,
पद्मश्री से अलंकृत डॉ. सुकामा सहित प्रतिष्ठित विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं को किया गया सम्मानित



आर्य जगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 20वीं पुण्य तिथि के अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली (रोहतक) में दिनांक 6 से 12 जून 2026 तक आयोजित सात दिवसीय 'राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर' का भव्य एवं प्रेरणादायी आयोजन हुआ। शिविर का आयोजन सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद, युवा निर्माण अभियान तथा बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। देश के विभिन्न राज्यों से आई लगभग 500 बालिकाओं ने इस शिविर में भाग लेकर वैदिक संस्कार, योग, आत्मरक्षा, राष्ट्रभक्ति, आत्मनिर्भरता एवं चरित्र निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर का शुभारंभ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य द्वारा ध्वजारोहण तथा समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री जगमोहन मित्तल की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि शिक्षित एवं संस्कारित नारी ही श्रेष्ठ मानव और स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती है। उन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्त्री शिक्षा एवं अधिकारों के क्षेत्र में योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि आर्य समाज आज भी नारी के सम्मान, शिक्षा और स्वाभिमान की रक्षा के लिए निरंतर कार्यरत है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य ने कहा कि माँ बच्चे की प्रथम गुरु होती है। यदि महिलाओं को उचित शिक्षा एवं संस्कार प्राप्त होंगे तो आने वाली पीढ़ियाँ भी संस्कारित और सशक्त बनेंगी। उन्होंने उपस्थित कन्याओं को ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति और ईश्वरभक्ति का संकल्प दिलाया।

मुख्य अतिथि श्री जगमोहन मित्तल ने युवाओं को जीवन में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने, सकारात्मक सोच अपनाने, अनुशासन बनाए रखने तथा निरंतर परिश्रम को सफलता की कुंजी बताया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहिन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियों का संरक्षण, संस्कार एवं चरित्र निर्माण समाज की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि आज की



बेटियों को सुरक्षा, स्वाभिमान और आत्मविश्वास के साथ जीवन जीना सीखना होगा, तभी वे प्रत्येक चुनौती का सामना कर सकेंगी।

शिविर की मुख्य संयोजक एवं सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहिन प्रवेश आर्या ने कहा कि बेटियों को समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और संस्कारित वातावरण उपलब्ध कराना समय की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि अनुशासित दिनचर्या बच्चों में आत्मसंयम, समयबद्धता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है। शिविर में प्रतिदिन प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक निर्धारित कार्यक्रमों का संचालन किया गया।

शिविर के दौरान योगासन, प्राणायाम, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, जूडो-कराटे, कमांडो प्रशिक्षण, लाठी संचालन, तलवारबाजी तथा आत्मरक्षा का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण एकता आर्या के नेतृत्व में छवि आर्या, अंकिता आर्या, अंतिम आर्या, अंजू आर्या, हिमांशी आर्या, अंजलि आर्या एवं अवनी आर्या द्वारा प्रदान किया गया। प्रशिक्षण का उद्देश्य बालिकाओं में आत्मविश्वास, अनुशासन, शारीरिक दक्षता तथा आत्मरक्षा कौशल का विकास करना था।

शिविर में अमेरिका से पधारे श्री गगन सूद ने जीवन में लक्ष्य निर्धारण, अनुशासन एवं शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक सोच विकसित करने का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने आश्रम की गौशाला में श्री आरिश साहनी के सहयोग से नव-निर्मित शैड का

लोकार्पण भी किया। विदित हो कि श्री आरिश साहनी जहाँ गौशाला के लिए विशेष सहयोग करते हैं वहीं कन्या चरित्र निर्माण एवं कन्याओं से सम्बन्धित विविध गतिविधियों के लिए भी समय-समय पर अपना सहयोग देते रहते हैं। श्री गगन साहनी उनके प्रतिनिधि के रूप में शिविर में पधारे थे।

प्रसिद्ध स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. अंजू आहूजा ने बालिकाओं को स्वास्थ्य, स्वच्छता, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम तथा मानसिक स्वास्थ्य के महत्व की जानकारी दी।

नाड़ी वैद्य कायाकल्प संस्थान के संस्थापक वैद्य सत्यप्रकाश आर्य ने आयुर्वेद आधारित जीवनशैली, प्राकृतिक चिकित्सा तथा नियमित योगाभ्यास को स्वस्थ जीवन का आधार बताया। पुलिस विभाग की ओर से श्रीमती कर्मेन्द्र कौर ने शिविरार्थी कन्याओं को आत्मरक्षा के विशेष गुर सिखाये और उन्हें विशेष प्रेरणा दी।

पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती कृष्णा फौगाट ने छात्राओं को तनावमुक्त अध्ययन के सूत्र बताते हुए समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण एवं सकारात्मक सोच को सफलता का आधार बताया। कर्नल श्री आर.के. सिंह तथा डी.एस.पी. श्री अर्जुन सिंह ने भी महिला जागरूकता और राष्ट्र निर्माण में बेटियों की बढ़ती भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।

शिविर के दौरान वैदिक संस्कार, राष्ट्रभक्ति, व्यक्तित्व विकास, संध्या, हवन तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का नियमित आयोजन किया गया। प्रतिभागी बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक सभी कार्यक्रमों में भाग लेते हुए संस्कारित, आत्मनिर्भर और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक बनने का संकल्प लिया।

शिविरार्थी कन्याओं ने गांव में विशाल रैली निकालकर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की जय के गगनभेदी नारों से वातावरण को गुंजा दिया। गांव में अनेक स्थानों पर शरबत एवं जलपान द्वारा कन्याओं का स्वागत किया गया।

शुक्रवार 12 जून, 2026 को आयोजित समापन समारोह में शिविरार्थियों ने लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, योगासन एवं सर्वांगसुन्दर व्यायाम का आकर्षक प्रदर्शन किया, जिसकी उपस्थित जनसमूह ने मुक्तकंठ से सराहना की।

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पर्यावरण और सांस्कृतिक चेतना

— डॉ. आशा मेहता

पर्यावरण के अन्तर्गत नदी, पहाड़, जल, पशु-पक्षी, हवा, मिट्टी के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनतिक परिस्थितियाँ भी समाहित हैं। वर्तमान में बढ़ती जा रही प्रदूषण की समस्या को सुलझाना है तो सांस्कृतिक चेतना के उसी आधार को पुनः जीवित करना ही होगा जिसे भौतिकता की चकाचौंध में हम भूल गये हैं।

डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' ने संस्कृति की व्याख्या करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है 'अतएव संस्कृति वह भावबोध है जो हमारे सारे जीवन में व्याप्त है और जिसकी रचना एवं विकास में अनेक सदियों का हाथ है।' विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी भारतीय संस्कृति के आधार को स्पष्ट करते हुए कहा था कि भारतीय संस्कृति न गांवों की है और न ही नगरों की, वास्तव में भारत की संस्कृति अरण्य संस्कृति है।

हमारे महान और दूरदर्शी ऋषियों, मुनियों एवं तपस्वियों ने अपनी दीर्घकालीन साधना से इतिहास, परम्परा, दर्शन तथा संस्कृति का निर्माण किया। उनके गूढ़ सूत्रों को व्याख्या करने वाले नहीं समझ सके और उन्होंने अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु बाह्य कर्मकाण्डों द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति के उदात्त व शाश्वत मूल्यों की गरिमा को नष्ट करने का प्रयास किया।

संस्कृति वास्तव में जीवन की एक शैली है। इस दृष्टि से जब हम पर्यावरण का विश्लेषण करते हैं तो पता चलता है कि प्रकृति और संस्कृति अन्यान्याश्रित हैं। प्रकृति व्यक्ति के आन्तरिक और बाह्य स्तर पर भौतिक पर्यावरण निर्मित करती है तो संस्कृति से व्यक्ति के अन्तः और बाह्य सांस्कृतिक पर्यावरण की रचना होती है। उदाहरणार्थ सांस्कृतिक पर्यावरण से युक्त व्यक्ति प्रकृति के प्रति आत्मीयता रखेगा और कभी भी उसका शोषण नहीं करेगा। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यह बात विशेष ध्यातव्य है कि भारत का सांस्कृतिक आदर्श और परम्परागत आधार अध्यात्म रहा है। आधुनिक शब्दावली में जिसे पर्यावरण, परिवेशिकी और परिस्थितिकी कहा जाता है उसे ही भारतीय संस्कृति की शब्दावली में

'प्रकृति' कहते हैं।

अथर्ववेद में पृथ्वी से आत्मीयता इन शब्दों में व्यक्त की गई है — जिस धरती पर वृक्ष, वनस्पति एवं औषधियाँ हैं जहाँ स्थिर और चंचल सबका निवास है उस विश्वम्भरा धरती (मातृभूमि) के प्रति हम कृतज्ञ हैं — हम उसकी स्वतंत्रता की प्राणपण से रक्षा करेंगे।' — अथर्ववेद 12.10.31

कृतज्ञता का यह भाव सांस्कृतिक चेतना के कारण आज तक हमारे रोम-रोम में बसा हुआ है, इसी कारण प्रातःकाल पृथ्वी का स्पर्श कर उसे प्रणाम करते हुए क्षमायाचना की जाती है।

आज अनेक पर्यावरणविद् प्रकृति की ओर लौटों का नारा लगा रहे हैं लेकिन स्वार्थ की आपाधापी में सुनने की फुर्सत किसे है? किन्तु जनमानस की सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करके यह अवश्य बताया जा सकता है कि प्रकृति का संरक्षण ही मानवता का रक्षण है।

भारतीय संस्कृति का मूल स्वर अहिंसा है। इस अहिंसा का आधार भी आध्यात्मिक है क्योंकि भारतीय संस्कृति के अनुसार सारी सृष्टि ब्रह्म में व्याप्त है। जड़-चेतन सभी ब्रह्ममय हैं। यही कारण है कि भारत में वृक्ष काटने को ब्रह्महत्या के समान माना गया है। हमारी संस्कृति में मांसाहार के बदले शाकाहार को इसीलिए स्वीकार किया गया है क्योंकि यहाँ सभी को जीने का समान अधिकार है। सांस्कृतिक चेतना की जीवन्तता का यह विशिष्ट प्रमाण है कि इसमें मनुष्य होने का व्यापक अर्थ यह है कि वह अपने आसपास के जैविक संसार के प्रति किस प्रकार का व्यवहार करता है? सम्पूर्ण प्रकृति में मनुष्य सर्वाधिक चेतनशील प्राणी है? पशु-पक्षी, पेड़, वनस्पतियाँ कम चेतनशील हैं अतः मनुष्य का यह दायित्व बन जाता है कि वह अपने से कम सामर्थ्य की रक्षा करे तभी वह विवेकी और जाग्रत कहलाने का अधिकारी हो सकेगा।

भारतीय संस्कृति में हम अनेक पर्वों पर वन्य जीवों एवं वनस्पतियों की अर्चना करते हैं। अर्चना से तात्पर्य रक्षण से हैं। सरस्वती के साथ मोर, दुर्गा के साथ सिंह,

गणेश के साथ चूहा, शिव के साथ बैल और कृष्ण के साथ गाय पूज रहे हैं। तुलसी घर-घर में पूज्य है। पीपल में विष्णु का वास है वट वृक्ष सौभाग्यदायी है। नीम की कोपलें चैत्र नवरात्र में सेवनीय हैं।

हिंसा को पाप मानते हुए 'मनुस्मृति' में कहा गया है कि जो व्यक्ति पशु हत्या की आज्ञा देता है, जो पशु को काटता है, जो उसे मारता है, जो मांस बेचता या खरीदता है जो उसे परोसता है और जो उसे खाता है वे सब हत्या के दोषी हैं। इसी तरह अपने आनन्द के लिए जो व्यक्ति निर्दोष पशुओं का वध करता है, उसे न तो जीवित रहते और न मरने के बाद कभी खुशी मिल सकती है।

विकास के नाम पर प्रकृति के जीवनदायी तत्वों से खिलवाड़ करने वाले स्वार्थी मानव ने प्रकृति का अदूरदर्शितापूर्वक अन्धाधुन्ध दोहन व शोषण किया है परिणामस्वरूप कार्बन-डाई-आक्साइड, मोनो आक्साइड, औद्योगिकधूल, परमाणु रेणु, चिमनियों के धुँएँ और अम्लीय वर्षा के माध्यम से अनेक गम्भीर रोगों के साथ-साथ प्रदूषित भोजन, प्रदूषित वायु, प्रदूषित जल के रूप में महाविनाश का उपहार प्रदान किया है। प्रदूषण की यह भयावह और विकट स्थिति हमारे लिए तो घातक है ही आने वाली पीढ़ियों के लिए तो और भी अधिक घातक सिद्ध होगी। भावी पीढ़ियाँ इस गम्भीर अपराध के लिए क्या हमें क्षमा कर पायेंगी? पर्यावरण प्रदूषण की इस त्रासद स्थिति में 'प्रकृति की ओर लौटो' का नारा केवल शाब्दिक शोभा वाक्य बनकर न रह जाये इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को सांस्कृतिक दृष्टि सम्पन्न बनाना होगा। सुदृढ़ आस्था और निरन्तर कर्मशीलता ही हमें पर्यावरण प्रदूषण के इस संकट से उबार सकती है —

घोर तामस में उजाला अब करेंगे हम, शुष्क मानव सुमन में सौरभ भरेंगे हम।

सुदृढ़ आस्था को कभी गिरने नहीं देंगे, धैर्य से बाधा समन्दर को तरेंगे हम।।

शुभ सूचना

ओ३म्

शुभ सूचना



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ



1100 /— रुपये में
उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े
सत्यार्थ प्रकाश के साथ
छोटे साईज का अंग्रेजी का
सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त
में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पतियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का
चौथा साईज

— : प्रकाशक : —

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई-मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3 / 5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
दूरभाष — 011-23274771, 011-42415359, मो.:-9868211979, 8218863689

ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

वेद में मैं एवं मेरी मातृभूमि

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार

वेद में भूमि को माता एवं मानव को उसका पुत्र कहा गया है। 'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्यां' अथर्ववेद की यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। वहां पर भूमि एवं पृथिवी दो पद हैं। भूमि मेरी माता है। इसका सम्बन्ध जन्म से है। माता भी जन्म देती है। पृथिवी के जिस भाग में जन्म हुआ है, वह मेरी मातृ तुल्य है। भवन्ति अस्याम् इति भूमिः। जहां मेरा जन्म हुआ है, वह मेरी मातृभूमि है। किन्तु मैं केवल इसी छोटे से स्थान का पुत्र नहीं हूँ अपितु पृथिवी, इस समस्त पृथिवी का पुत्र मैं हूँ। पृथिवी का सम्बन्ध विस्तार से है। 'प्रथनात् पृथिवी' अर्थात् जहां तक भी वह फैली हुई है वहीं तक समस्त पृथिवी का मैं पुत्र हूँ। इसमें देश, प्रान्त, नगर आदि की सीमाएं नहीं हैं। समस्त पृथिवी (भूगोल) एक है। यह तो हम ने अपने स्वार्थवश इस विशाल पृथिवी का विभाजन कर डाला। इसको नगर, प्रान्त देश आदि की सीमाओं में बांध डाला। पृथिवी तो अपने स्वरूप में उसी प्रकार एक है जैसे कि आकाश। किन्तु हम ने तो पृथिवी की भांति आकाश में भी अपनी अपनी सीमाएं निश्चित की हुई हैं। बिना आज्ञा के किसी भी देश की सीमा में प्रवेश अतिक्रमण माना जाता है किन्तु वह सब मानवकृत विभाग है। वेद के अनुसार तो हम समस्त पृथिवी के ही पुत्र हैं। वहां पर देश आदि की सीमाएं नहीं हैं।

मैं इस समस्त पृथिवी का पुत्र हूँ। मेरे दो कर्तव्य हैं — पहला यह कि मैं इस पृथिवी के पृथिवीत्व में वृद्धि करूँ। इसका विस्तार करूँ, जंगलों तथा ऊसर भूमि के रूप में अभी तक जो भूमि ऐसी पड़ी है जहां न तो निवास किया जा सकता है, न कृषि आदि। पुत्र होने के नाते मेरा कर्तव्य है कि मैं उस भूमि को निवास योग्य बनाऊँ। वही भूमि का विस्तार है। अब तक उसका नाम पृथिवी नहीं अपितु जंगल आदि के रूप में था। पुत्र के रूप में मेरा दूसरा कर्तव्य इस समस्त पृथिवी की, इस पर बसे मानवों की सेवा करना है। माता-पिता का नरक अथवा दुःख से त्राण करने के कारण ही पुत्र को पुत्र कहा जाता है। यदि मैं भी इस पृथिवी का पुत्र हूँ तो मेरा भी कर्तव्य है कि मैं भी इस पर बसने वाले प्राणियों के कष्ट को दूर करके उन्हें सुख प्रदान करूँ।

मातृभूमि के शत्रु:—

कुछ ऐसे भी उपद्रवी तत्व होते हैं जो इस पृथ्वी की शांति को भंग करते ही रहते हैं हत्या लूटपाट, आक्रमण करना ही उनका उद्देश्य रहता है। इस प्रकार के कार्यों में व्यक्तिगत स्तर पर दुष्ट मानव, उनके विभिन्न संगठन तथा शेष देश भी सम्मिलित रहते हैं। ऐसे शत्रुओं को वेद में चार रूपों में विभक्त किया गया है —

(1) यो नो द्वेषत —

जो केवल मन से द्वेष करते रहते हैं। अपने देश की सीमाओं में बंद होकर दूसरे देश की उन्नति को सहन नहीं कर सकते हैं येन-केन-प्रकारेण उसके मार्ग में बाधाएं खड़ी करते रहते हैं। ऐसे देश अथवा संगठन दूसरे देश के ऊपर साक्षात् आक्रमण नहीं करते अपितु परोक्ष रूप में ही उसके उन्नति में बाधा उपस्थित करते रहते हैं। चीन वही तो कर रहा है भारत पर सीधा आक्रमण ना करके भी वह निरंतर इस के मार्ग में बाधा उपस्थित करता रहता है। अन्य देश भी इस कार्य में उसके सहयोगी हैं। दूसरे देश से नहीं अपने भारत के अंदर निवास करने वाले भी अनेक ऐसे व्यक्ति तथा संगठन हैं जो भारत की उन्नति को सहन नहीं करते तथा मन ही मन इसके साथ द्वेष एवं ईर्ष्या रखते हैं ऐसे संगठन विविध जाति एवं धर्म के रूप में अथवा स्वतंत्र भी होते हैं।

(2) यः पृतन्यातः —

जो साक्षात् सेना लेकर आक्रमण करते हैं वे तो मेरी मातृभूमि के साक्षात् शत्रु है ही। भारत पर पहले भी इस प्रकार के विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। मुसलमानों के अनगिनत आक्रमण इसके प्रमाण हैं भारत की संस्कृति को नष्ट करते रहे यहां की संपदा को लूटते रहे तथा यहां अपने साम्राज्य का विस्तार करते रहे आज भी वह प्रवृत्ति जारी है 1962 ईस्वी का चीनी आक्रमण तथा

1947 एवं 1965 के पाकिस्तानी आक्रमण इसके प्रमाण हैं आज भी पाकिस्तान आक्रमण की तैयारी में रहता ही है। अपनी शक्ति बढ़ा रहा है। चीन आदि देश भी उसके साथ रहते हैं देश के अंदर भी इस प्रकार के आक्रमण होते रहते हैं एक संगठन अपने विद्रोही समाज के संगठन पर आक्रमण करता रहता है।

(3) योऽभिदासान् मनसाः —

कुछ देश दूसरे देश पर सीधा आक्रमण न करके मानसिक रूप में उस देश को वहां के निवासियों को अपना दास बना लेना चाहते हैं। यह उन आक्रमणकारियों की अपेक्षा अधिक खतरनाक होते हैं जो कि सेना के द्वारा सीधा आक्रमण करते हैं। ऐसे आक्रमण के विरुद्ध तो समूचा देश एक हो उठता है। उसका प्रतिरोध आपसी भेदभाव भुलाकर भी किया जाता है। पाकिस्तानी तथा चीनी आक्रमण के समय ऐसा ही किया था किंतु जो देश मानसिक रूप से हमें गुलाम बनाना चाहता है उसका प्रतिरोध दुष्कर होता है क्योंकि सामान्य जनता उसकी चाल नहीं समझती है। ऐसे देश दूसरे देश की शिक्षा सभ्यता साहित्य एवं संस्कृति पर कुठाराघात किया करते वहां के धर्म को नष्ट किया करते हैं और किसी प्रकार का आक्रमण सेना आदि के द्वारा नहीं करते हैं। किन्तु नीचे ही नीचे किसी देश की सभ्यता संस्कृति एवं धर्म को नष्ट करके उसकी जड़ों को खोखला कर देते हैं। अंग्रेजों ने यही किया था। वह कहावत ठीक ही है कि यदि किसी देश को नष्ट करना हो तो उसके साहित्य एवं संस्कृति को नष्ट कर दो। अंग्रेज इस कार्य में सफल हुए। वह मुसलमानों की भांति आक्रांता के रूप में यहां नहीं आए थे वह व्यापारी की भांति आए थे। किंतु यहां अपने पैर जमाते ही अपना साम्राज्य स्थापित होते ही उन्होंने यहां की शिक्षा सभ्यता संस्कृति एवं साहित्य पर कुठाराघात किया। इनके स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा, साहित्य, सभ्यता एवं संस्कृति का विस्तार किया, उनका प्रयास सफल रहा। परिणाम स्वरूप अंग्रेजी राज्य की समाप्ति के 70 वर्ष पश्चात् भी हम मानसिक रूप से अभी भी उनकी गुलामी को आज तक ढो रहे हैं तथा पता नहीं कब तक ढोते रहेंगे। ऐसे यत्न तो अभी तक समाप्त नहीं हुए हैं। अपितु अहर्निश हो रहे हैं। विदेशी पादरियों के रूप में एक सुसम्बद्ध एवं सशक्त रूप में यही कार्य अभी भी किया जा रहा है। उनको भरपूर विदेशी आर्थिक सहायता दी जा रही है यह सब कुछ भारतीयों को मन से दास बना लेने का ही तो यत्न है। दूरद्रष्टा वीर सावरकर का कहना धर्मांतरण यानि राष्ट्रान्तरण गलत नहीं था। नागालैंड आदि इसके प्रमाण हैं।

(4) यो बधेनः —

कुछ संगठन तथा देश दूसरे देश पर ना अधिकार करते हैं ना उनको मन से दास बनाने का यत्न करते हैं किंतु नरसंहार करके अपनी प्रवृत्ति का प्रदर्शन ही करते हैं। पुराने जमाने के विदेशी आक्रांताओं में अनेक ऐसे थे जिनके द्वारा निरपराध जनता के कत्लेआम के साक्षी आज भी इतिहास की यह पुस्तकें दे रही हैं जो स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। तैमूर लंग, नादिरशाह, चंगेज खां आदि आक्रांता इसके उदाहरण हैं आज भी कश्मीर तथा यथाशक्ति अन्य स्थानों पर भी आतंकवादी वही तो कर रहे हैं।

ऐसे समस्त शत्रुओं के प्रति हम क्या व्यवहार करें, वेद कहता है तूं नो भूमं रन्धय। हे मातृभूमि! इस प्रकार के समस्त शत्रुओं को उसी प्रकार रांध दे जैसे कि पत्तीली में सब्जी को अग्नि से रांध दिया जाता है। पृथ्वीराज चौहान की भांति 16 बार मोहम्मद गौरी जैसे शत्रु को परास्त करके छोड़ दिए जाने की गलती वेदज्ञ राजा नहीं करेगा। कैसी जहालत थी कि शत्रु बार-बार विदेश से आकर तुम पर आक्रमण कर रहा है तथा तुम बार-बार उसे अपनी वीरता के दर्प में छोड़ देते हो जबकि वह एक बार सफल होकर तुम्हें बन्दी बनाकर गजनी ले जाकर आखें निकलवा देता है। यदि तुमने सफल होकर उसे एक बार में ही रौंद दिया होता तो

भारत को वह दुर्भाग्य न देखना पड़ता।

हमारा कर्तव्य है कि हम इस प्रकार के सभी शत्रुओं को पहचान कर उनके मूलानाश का यत्न करें। पूरा मन्त्र इस प्रकार है —

यो नो द्वेषत् पृथिवी यः पृतन्याद् योऽभिदासान्।
मनसा यो बधेन तं नो भूमे रन्धय पूर्व कृत्वरि॥
(अथर्ववेद 12/1/14)

वेद इस प्रकार के सभी मनुष्यों को कठोर दंड की आज्ञा देता है। जो भी उग्रवाद या आतंकवाद का आश्रय लेकर निर्दोष प्राणियों का वध करते हैं या कत्लेआम जैसे दुष्कृत्य करते हैं, वेद उनके विषय में कहता है — 'अनागो हत्या वै भीमा।' निरपराध का वध करना बहुत भयंकर कार्य है। ऐसे निंदनीय कार्य करने वालों को जीवित नहीं छोड़ना चाहिए। कठोर दंड या उनका समूल नाश ही एकमात्र उपाय है। मनु ने भी ऐसे व्यक्तियों के लिए ही कहा है — आततायिनम् आयान्तं हन्यादेवविचारयन्' अर्थात् आतताई आतंकवादी को बिना विचार किए ही मृत्यु दंड दे देना चाहिए। आज हमारे देश में कठोर दंड समाप्त हो रहा है। अपराधी न्याय प्रक्रिया को बाधित करके दंड से बचे रहते हैं। राजनीतिक स्तर पर भी उन्हें बचाने के प्रयास किए जाते हैं इसका प्रयत्न उदाहरण हमारे देश में देखा जा सकता है। आज कितने ही आतंकवादी और गम्भीर अपराधों में लिप्त अराजक तत्त्व जेलों में बन्द हैं और सरकारें उनके लिए उचित दण्ड व्यवस्था का निर्णय नहीं कर पा रही हैं। इस प्रकार देश कैसे सुरक्षित रह सकता है।

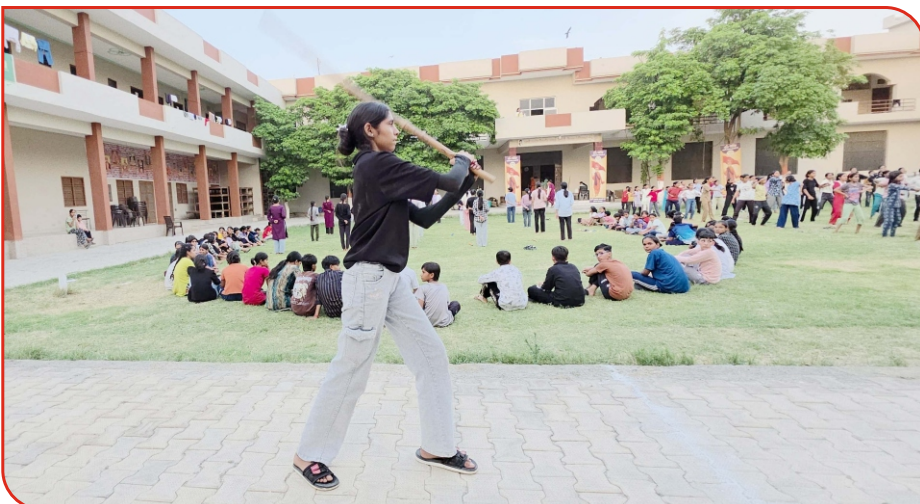
एक ही आतंकवादी अनेक निर्दोष नागरिकों का नाश कर देता है। यह उन्हें कठोर दंड न मिलने के कारण ही हो रहा है। वेद राष्ट्रद्रोही आतंकवादियों तथा आक्रमणकारियों के समूल विनाश की आज्ञा देता है। तभी मेरी मातृभूमि सुरक्षित रहेगी। मेरा अपनी मातृभूमि से भावनात्मक संबंध है। उसका अन्न पानी खाकर उसके पदार्थों का उपयोग करके मेरा पालन-पोषण हुआ है। मेरी मातृभूमि ने मेरी माता के समान ही मेरा संवर्धन एवं पालन किया है। वेद कहता है — "सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः" जिस प्रकार माता पुत्र को अपना दुग्धपान कराती है, उसी प्रकार मेरी मातृभूमि ने मेरे लिए विविध पदार्थ प्रदान किए हैं। अतः मेरा भी कर्तव्य बनता है कि मैं भी अपनी माता के समान ही मातृभूमि की सेवा करूँ। इसीलिए वेद आदेश देता है — 'उपसर्व माता भूमिम्' भूमि माता की सेवा के लिए आगे आओ।

वेद एक अन्य दिशा में भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है हम अपने स्वार्थवश निरंतर पृथ्वी का दोहन किए जा रहे हैं इसके जंगलों को नष्ट कर रहे हैं। नदियों को प्रदूषित कर रहे हैं। पहाड़ों को नष्ट कर रहे हैं। जिससे पृथ्वी का वातावरण विषाक्त हो गया है यदि ऐसा ही रहा तो एक दिन पृथ्वी पर रहना भी दूभर हो जाएगा। वेद कहता है —

"यत्ते भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु" हे मातृभूमि! मैं तेरी जो भी क्षति करूँ जंगल आदि काटूँ वह पुनः समृद्ध हो जाए। जितने वृक्ष काटे जाएं उनके स्थान पर नए वृक्ष लगाए जाएं, जितनी भी गंदगी पृथ्वी पर फेंकी जाए, उसे शुद्ध करने के साधन भी उसी मात्रा में होने चाहिए, तभी वातावरण स्वच्छ रह सकेगा अन्यथा प्रदूषण होगा ही।

राष्ट्र में एक अन्य प्रकार का प्रदूषण भाषा प्रांत जाति तथा धर्म के नाम पर पार्थक्य का भी चल रहा है एक जाति दूसरी जाति को तथा एक धर्म वाला दूसरे धर्म वाले को एक प्रांत तथा भाषा वाला दूसरे प्रांत वाले को नष्ट करना चाहता है। दूसरे धर्म वालों का धर्मांतरण किया जाता है या उसकी हत्या कर दी जाती है। ईसाई तथा मुसलमान तो विदेशी धन के आधार पर गरीब लोगों को लालच तथा भय देकर ऐसा करते हैं। वेद कहता है हम सभी राष्ट्रवादी पृथिवी पर उसी प्रकार रहें, जैसे एक घर में उसके सदस्य रहते हैं — जनं विभ्रती बहुधा विवायसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्' इस प्रकार रहने से ही पृथ्वी पर शान्ति रह सकती है।

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर की चित्रमय झलकियाँ



राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर की चित्रमय झलकियाँ



सार्थक जीवन में योग

— डॉ. अन्नपूर्णा

संसार में प्रत्येक व्यक्ति दुःख से छूटना चाहता है एवं साथ ही परमसुख अथवा परमानन्द को प्राप्त करना चाहता है, वह भी स्थायी रूप में जिससे मानव जीवन सार्थक हो जाये। इस लक्ष्य की पूर्ति कैसे सम्भव है? विचार करने पर पता चलता है कि संसार की वस्तुओं को भोगने से स्थायी आनन्द नहीं मिल सकता, क्योंकि संसार के भोगों में केवल क्षणिक सुख विद्यमान है और वह सुख भी दुःखमिश्रित है। अतः स्थायी आनन्द की प्राप्ति के लिए एवं मानव जन्म को इसी जन्म में सार्थक बनाने के लिए भोग नहीं, योग की आवश्यकता है। समस्त दुःखों से छूटने का उपाय तथा परमानन्द की प्राप्ति का उपाय वेदों में बताया गया है। जैसे —

जतमेव विदित्वाऽति मृत्युमेति, नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। यजु. 31/18

उस प्रभु को जानकर प्राप्त करके ही दुःखों से हम छूट सकते हैं। परमानन्द प्राप्ति के लिए और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। अतः आज के समाज में सच्चे योगियों को छोड़कर प्रायः सभी लोग किसी न किसी रूप में दुःखी हैं। इस कारण, उस ईश्वर को हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं, जो समस्त प्रकार के दुःखों से (आध्यात्मिक दुःख, आधिभौतिक दुःख, आधिदैविक दुःख) छुड़ा सकता है। इसका एकमात्र उपाय योग है। अतः योग को जानना है।

योग क्या है?

योग = योग शब्द युज् समाधौ धातु से धम् प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है। योगदर्शन में योग अन्य धातु से नहीं लिया गया। व्यास भाष्य में लिखा है — ‘योगः समाधिः’ अर्थात् समाधि को ही योग कहते हैं।

ऋषि पतंजलि ने योग का वास्तविक स्वरूप योगदर्शन में बताया है — ‘योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः’ — योग 1/2 अर्थात् चित्त के अन्दर जो वृत्तियाँ उभरती हैं, उन सब वृत्तियों को रोकना या निरोध करने का नाम योग है। आत्मोन्नति के लिए मानव को आध्यात्मिक तथा संयमयुक्त जीवन को अपनाना चाहिए, जिससे व्यक्ति के मन, वाणी तथा कर्म तीनों पवित्र होते हैं। व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना करता है, हे प्रभो! मेरे अन्दर जो भी त्रुटि है अथवा दोष है, उन सभी दोष को मुझसे दूर करो, यही मेरी प्रार्थना है। जैसे कि मन्त्र में कहा गया है —

“यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयमस्य मनसो वाऽतृण्णम् बृहस्पतिर्मे तद् दधातु” (यजुर्वेद 37/2)

जब मनुष्य अपने दोष को देखता है अथवा आत्मनिरीक्षण करता है, तब वह ऊपर उठता है, गुणों को धारण करता है। संसार में सबको समान देखता है, राग—द्वेष से परे हो जाता है। अपना कल्याण करता है तथा दूसरों का भी कल्याण करता है।

पहले बताया गया था कि योग समाधि को ही कहते हैं। उसमें ईश्वर साक्षात्कार होता है, परमानन्द की प्राप्ति होती है। तब वह भी जानना होगा कि समाधि तक कैसे पहुँचें।

इसका उत्तर है, जिसका व्यवहार काल शुद्ध होगा, उसका उपासना काल भी शुद्ध होगा। मनुष्य का ज्ञान शुद्ध हो तो कर्म भी शुद्ध होते हैं। फिर उपासना भी शुद्ध होती है। अतः ज्ञानी व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए व्यावहारिक जीवन को भी पवित्र बनाता है।

योग के आठ अंग हैं, जिसको अष्टांगयोग कहते हैं। महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन ग्रन्थ में भी उसका वर्णन किया है। इन आठ अंगों का पालन करके साधक समाधि तक पहुँचता है। ये अंग हैं :—

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि (योगदर्शन 2/27)

अर्थात् यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये उपासना योग के आठ अंग हैं। तद्यपि ये योग के आठ अंग ही विवेकज्ञान के लिए, प्रकृति और पुरुष की पहचान के लिए, आत्मा

और परमात्मा के साक्षात्कार के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं अर्थात् अपने जीवन के परम उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इनमें से किसी की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

1. यम :— यह पांच प्रकार के हैं। यथा — अहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः। (योगदर्शन 2/30)

अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये पांच यम कहलाते हैं।

अहिंसा का अर्थ किसी भी प्राणी को किसी भी समय मन, वाणी और कर्म से दुःख न पहुँचाना। सत्य का अर्थ है जो मनुष्य के मन में है, वही वाणी में हो, वही कर्म में हो अर्थात् जैसे देखा हो, जैसे सुना हो, जैसे अनुभव किया हो, वैसा ही वाणी में बोले, मन में धारण करे और आचरण में लाये, उससे व्यक्ति सफल होता है। अतः महर्षि पतंजलि ने कहा है —

‘सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्’ (योगदर्शन 2/37)

अस्तेय का अर्थ न स्तेय। चोरी को स्तेय कहते हैं। जो मनुष्य मन, वाणी और शरीर से किसी भी व्यक्ति के किसी भी पदार्थ के प्रति चोरी की भावना भी न करे तथा कर्म से भी न करे, उसे अस्तेय कहते हैं। अस्तेय के पालन से ईश्वर की ओर से सभी कुछ उत्तम द्रव्य प्राप्त होते हैं। महर्षि पतंजलि के योगदर्शन के अनुसार —

‘अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्’ (योग 2/37)

ब्रह्मचर्य का अर्थ है वीर्य की रक्षा करते हुए ब्रह्म में, ईश्वर में सदा विचरण करना अर्थात् वेदानुकूल जीवन व्यतीत करना तथा ब्रह्म में संलग्न रहना।

परिग्रह कहते हैं — चहुँ ओर से संग्रह करने को और अपरिग्रह कहते हैं चहुँ ओर से संग्रह न करने को। जितनी आवश्यकता है, उतने ही धन तथा द्रव्य को एकत्रित करना।

साधक विषयों के संग्रह करने अर्थात् धन सम्पत्ति को इकट्ठा करने, फिर उसकी रक्षा करने अर्थात् उसको सम्भालने और फिर उसके नष्ट हो जाने, समाप्त हो जाने में तथा उसके संग में, उपभोग में, सर्वत्र हिंसा रूप द्वेष को देखकर उन विषयों को स्वीकार नहीं करता, यही अपरिग्रह है।

महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शनानुसार — ‘अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोध’ (योगदर्शन 2/39) अर्थात् अपरिग्रह का दृढ़तापूर्वक पालन करने पर जन्म के सम्बन्ध में जानने की इच्छा तीव्र हो जाती है।

2. नियम — शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। महर्षि पतंजलि के योगदर्शनानुसार —

‘शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः’ (योगदर्शन 2/32)

3. आसन :— ऋषि पतंजलि के अनुसार ‘स्थिरसुखमासनम्’ (योगदर्शन 2/46) अर्थात् ईश्वर के ध्यान के लिए जिस स्थिति में सुखपूर्वक, स्थिर होकर बैठा जाए, उस स्थिति का नाम आसन है। उदाहरण : पद्मासन सिद्धासन, स्वस्तिकासन इत्यादि।

4. प्राणायाम :— महर्षि पतंजलि के अनुसार ‘तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोगति विच्छेदः प्राणायामः’ (योगदर्शन 2/49) अर्थात् किसी आसन पर स्थिरतापूर्वक बैठने के पश्चात् मन की चंचलता को रोकने के लिए श्वास, प्रश्वास की गति को विधिपूर्वक, विचार से यथाशक्ति रोकने हेतु, जो क्रिया की जाती है, उसका नाम प्राणायाम है।

5. प्रत्याहार :— महर्षि पतंजलि के अनुसार — ‘स्वविषयासंप्रयोगे चित्तस्वरूपाऽनुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः’ (योगदर्शन 2/54) अर्थात् मन के रुक जाने

पर नेत्रादि इन्द्रियों का अपने—अपने विषयों के साथ सम्बन्ध नहीं रहता, अर्थात् इन्द्रियाँ शान्त होकर अपना कार्य बन्द कर देती हैं। इस स्थिति का नाम प्रत्याहार है।

प्रत्याहार की सिद्धि होने से योगाभ्यासी का इन्द्रियों पर सर्वोत्कृष्ट वशीकरण हो जाता है। वह अपने मन को जहाँ और जिस विषय में लगाना चाहता है, लगा लेता है तथा जिस विषय में मन को हटाना चाहता है, हटा लेता है।

6. धारणा :— किसी स्थान विशेष पर चित्त को स्थिर रखना धारणा कहलाती है महर्षि पतंजलि के अनुसार — ‘देशबन्धश्चित्तस्य धारणा’ (योगदर्शन 3/1) अर्थात् ईश्वर का ध्यान करने के लिए आँखें बन्द करके, मन को मस्तक, भूमध्य, नासिका, कण्ठ, हृदय नाभि आदि किसी एक स्थान पर स्थिर करने या रोकने का नाम धारणा है।

7. ध्यान :— धारणा करने वाले स्थान पर एक वस्तु के ज्ञान का प्रवाह बना रहना ध्यान कहलाता है। महर्षि पतंजलि के अनुसार — ‘तत्र प्रत्ययैकतानता ध्यानम्’ (योगदर्शन 3/2) अर्थात् किसी एक स्थान पर मन को स्थित कर देने के पश्चात् वेदमंत्र या अन्य शब्दों के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करने के लिए, ईश्वर को अनुभव करने के लिए, उसके गुण—कर्म—स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करना किन्तु बीच में किसी अन्य वस्तु या विषय का स्मरण न करना ध्यान कहलाता है।

सांख्य के अन्दर कपिल ऋषि कहते हैं, इसके लिए मन को विषय से शून्य करना होगा। सांख्यादर्शनानुसार ‘ध्यानं निर्विषयं मनः’ अर्थात् सभी प्रकार के अर्थात् रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द इन विषयों से मन को हटाकर ही ध्यान में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

8. समाधि :— वह ध्यान ही समाधि कहलाता है, जो केवल वस्तु के स्वरूप (ईश्वर के स्वरूप) को प्रकाशित करने वाला हो और अपने स्वरूप से रहित हुआ हो। महर्षि पतंजलि के अनुसार — ‘तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरूपशून्यमिव समाधिः’ (योगदर्शन 3/3) अर्थात् शब्दप्रमाण तथा अनुमान प्रमाण के माध्यम से ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर चिन्तन करते रहने पर जब ईश्वर का प्रत्यक्ष होता है, अर्थात् ईश्वर के आनन्द में साधक निमग्न हो जाता है, तब उस अवस्था को समाधि कहते हैं।

ध्यान और समाधि में भेद यह है कि ध्यान में ईश्वर की खोज चलती रहती है और जब ईश्वर की खोज पूर्ण होकर ईश्वर का प्रत्यक्ष हो जाता है तो वही समाधि कहलाती है।

जो व्यक्ति संसार के राग, द्वेष में फंसा रहता है एवं सकाम कर्म करता है, वह कभी ध्यान नहीं कर सकता। अतः पांच प्रकार के क्लेशों से शून्य होकर अन्तरात्मा को निर्मल करता हुआ साधक परमात्मा के पवित्र आनन्द को प्राप्त कर सफल होता है क्योंकि नित्यान्द का एकमात्र आधार ईश्वर है। अतः कहा गया है —

‘रसोवैसः। रसं लब्ध्वा आनन्दी भवति।’

अर्थात् आनन्द (सबसे स्वादिष्ट रस) से वह परमात्मा परिपूर्ण है। जो व्यक्ति इसे प्राप्त करता है, वह आनन्दमय हो जाता है। अतः काम, क्रोध, लोभ, मोह, इन पर विजय प्राप्त करके उस आनन्द की ओर चलना है, अपना जीवन सार्थक कर लेना है, सम्पूर्ण संसार को असत् मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलाना है, अनेक लोगों को जीवन का सत्य पथ दिखाना है, बहुत लोगों का कल्याण करते हुए ईश्वर को प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक बनाना है और परिशेष में समाधि को प्राप्त करना है।

— आचार्या द्रोणस्थली, आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

वैदिक जीवन मूल्यों की सार्वभौमिकता

- डॉ० स्नेहलता गुप्ता

चारों वेद मानवीय मूल्यों के निर्णायक ग्रन्थ हैं। योग के यम नियमों, धर्म के दसों लक्षणों और चारों पुरुषार्थों के जीवन्त उदाहरण हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह^१क तथा शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधानख— ये यम नियम, धैर्य, क्षमा (इन्द्रियों का) दमन, अस्तेय, शौच (पवित्रता) इन्द्रिय—निग्रह बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध (क्रोध न करना) — धर्म के ये दस लक्षण,२क धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष— ये चारों पुरुषार्थ ये सब मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में संक्षेप में इनको सप्तमर्यादा के रूप में परिगणित करते हुये लिखा है कि— हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्यभाषण और इन पापों को करने वाले दुष्टों के सहयोग का नाम सप्त मर्यादा है, इनमें से जो एक भी मर्यादा का उल्लंघन करता है अर्थात् एक भी पाप करता है, वह पापी होता है।^३

हिंसा का निषेध करते हुए यजुर्वेद (वा०स०— ६/६२) में लिखा है कि मनुष्य को न तो सर्प के समान विषैला होना चाहिये और न व्याघ्रादि के समान हिंसक। वेदों में पशुवध और मांस भक्षण को पूर्णतया अनुचित माना है।^४ और 'मा हिंसी' शब्द के द्वारा यत्र तत्र इसका विरोध भी किया है। यज्ञ को अध्वर कहने का तात्पर्य यज्ञ के अहिंसक होने का ही पर्याय है।^५ महाभारत के अनुशासन पर्व में हिंसा के विपरीत लिखा है कि, अहिंसा परम धर्म है, परम तप है, परम सत्य है, इसी से धर्म प्रवर्तित होता है,६ किन्तु हिंसा के भय से ग्रस्त मनुष्य सदाचार के पथ से विचलित होकर पाप करने के लिये प्रवृत्त हो सकता है इस भय से छुटकारा पाने का किसी भी ग्रन्थ में अथवा अन्यत्र कोई उपाय नहीं है, हाँ वेदों में अवश्य ही अभय प्राप्ति का एक ऐसा मन्त्र है, जिसमें मित्र से, शत्रु से ज्ञात से, अज्ञात से, रात्रि में, दिन में एवं समस्त दिशाओं में भय रहित होने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई है।^७ इस प्रकार भयरहित एवं अहिंसक व्यक्ति की शान्ति प्रिय होता है। और शान्ति का अभिप्राय है— ईर्ष्या, द्वेष, कलह और लड़ाई आदि की निवृत्ति, राग द्वेष दुःख दरिद्रता की समाप्ति, पशु पक्षियों की हत्या से उत्पन्न करुण क्रन्दन का अन्त, वृक्षां पर चलती हुई कुल्हाड़ी की रोक। अथर्ववेद का ऋषि मानवों को परामर्श देता हुआ कहता है कि जीवन रूपी पथरीली नदी बह रही है, उठो और प्रयत्न से पार करो, जो हमारे कल्याण के विरुद्ध हैं, उनका साथ छोड़ो।^८ इस प्रकार वैदिक विचारधारा अहिंसा की पक्षधर होने पर भी शत्रुओं के विनाश की कामना करती है। **शटे शादय समाचरेत्** की नीति को उचित उहराती है।^९ विरुद्ध आचरण करने वाले व्यक्तियों को भस्मसात् करने का आदेश देती है।^{१०} किन्तु आज हमारे देश में राजनीति के नियम कानून भी वेदों के इस मानवीय मूल्य का उपहास कर रहे हैं। एक मुजरिम जो हमारे लोकतन्त्र के प्रतीक संसद भवन पर हमला करता है, वहां के रक्षकों को मौत के घाट उतार देता है, पुलिस उसे पकड़ती है और न्यायालय उसे फांसी की सजा सुनाता है देश की जनता २० अक्टूबर २००६ पर (जिस दिन उसे फांसी की सजा होनी निश्चित हुई थी) नज़रे गड़ाये रही किन्तु देश के विश्वासघाती राजनेताओं ने अपनी कुर्सी की सुरक्षा के लिये उसे फांसी नहीं होने दी। जेल में भी उसे सारी सुख सुविधायें उपलब्ध हैं।

शत्रुओं के लिये अथर्ववेद में लिखा है कि शत्रुओं को राजा बाहु छेदन करके विनष्ट कर दे। ऋग्वेद में स्थान—स्थान पर चोर हिंसक व्यभिचारी घृतव्यसनी स्तेन तस्कर आदि विभिन्न प्रकार के समाज विरोधी शत्रुओं को समूल नष्ट करने का संकेत है (ऋग्वेद—२/२३/१६, ऋग्वेद— ६/५५/३) किन्तु इस प्रकार शत्रुओं के विनाश में प्रयत्न तथा युक्ति से काम लेना चाहिये (अथर्ववेद— ४/३२/३) क्योंकि सब काम धर्मानुसार सत्य असत्य को विचार कर करने चाहिये। वस्तुतः अहिंसा अनाचार अन्याय और आडम्बर के दृढ़ दुर्ग सत्य के द्वारा ही धराशायी हो सकते हैं, इसीलिये प्रजापति ने सत्य और असत्य को समझ बूझकर अलग किया है। असत्य में अश्रद्धा और सत्य में श्रद्धा उत्पन्न की है (यजुर्वेद १६/७७)

मानवीय मूल्यों में सत्य का स्थान सर्वोपरि है। त्रिकालदर्शी—ऋषियों ने दैवी जगत के सत्य को 'ऋत्' और लौकिक जगत के सत्य को 'सत्य' कहा है। वेद में **ऋत् च सत्यञ्चायीद्वातपसोऽध्यजायत** (अथर्ववेद १२/१/१) कह कर ऋत और सत्य का एक साथ भी उल्लेख है। ऋग्वेद (१०/६२/३) में यज्ञ को ऋत का साक्षात् स्वरूप मानते हुए लिखा है कि यज्ञ करना मानो सत्य को ही प्रतिष्ठापित करना है। इसी सत्य स्वरूप ऋत के मार्ग का अनुसरण समस्त पापों का विनाशक है ऋग्वेद १/४/१ सत्यता के साथ—साथ वाणी की मधुरता का भी वेदों में उल्लेख है^{११} संस्कृत के किसी कवि का कथन है कि **सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।**

लोकाचार में भी यह कहा जाता है कि—

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।

किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह भी चलता है—

ऐसी वाणी बोलिये, कि सबसे झगड़ा होय।

पर उससे झगड़ा ना करें, जो आपसे तगड़ा होय।

वस्तुतः आज ऋत का स्थान अनृत ने, सत्य का असत्य ने, संयम का असंयम ने, धर्म का अधर्म ने, सन्तोष का असन्तोष ने, कर्तव्य निष्ठा का कर्तव्य हीनता ने और शीलता का अश्लीलता ने ले लिया है। आज की भांति वेदकालीन युग में मानव के पास कोठी, बंगले, गाड़ी, दूरदर्शन आदि भोग ऐश्वर्य के साधन नहीं थे वे तो अन्न, धन, गौओं पशुओं, कीर्ति प्रजा (पुत्र, पुत्री, पौत्र, पौत्री आदि) को ही ऐश्वर्य समझ कर (अथर्ववेद १/३१/४) इनकी याचना करते थे,१२ किन्तु आज का युग परिवार नियोजन का युग है संयुक्त

परिवारों का स्थान छोटे परिवारों ने ले लिया है।

ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य धारण कर वीर पुत्रों को जन्म देने वाली और सहन शील स्वभाव वाली है।^{१३}क उग्र वर्चस्विनी कठिन गुण कर्म स्वभाव वाली थी एवं शोभा से सम्पन्न नारियां ही समाज में समादृत होती हैं।^{१४}क ऐसी स्थिर स्वभाव वाली ओजस्विनी नारियां वेद के युग की शोभा थीं। उस काल में नारियों को यह आदेश भी था कि उनके ओष्ठ प्रान्त और कटि का निम्न भाग भी न दिख सके। (ऋग्वेद ८/३३/१६) कहाँ पाश्चात्य संस्कृति से प्रेरित आज की स्वच्छन्दचारिणी मल्लिका शेरावत जैसी नारियाँ।

नारियाँ आज ऐसी बनी मार हैं,

न लज्जा से जिनका सरोकार है।

होड़ फैशन की हरदम लगी है यहाँ,

थोड़े, कपड़ों में नंगा बदन आज है।

लोपामुद्रा, गार्गी जैसी नारियों से गौरवान्वित था वह वेद का युग, जहाँ नारी—आदर्श बहन, आदर्श पत्नी व आदर्श माता थी। वैदिक युग का वह सुदृढ़ समाज ऐसे परिवार की कल्पना करता था, जहां माता—पिता सन्तान के कल्याण की कामना करते थे वहां पुत्र भी अपने माता—पिता के कल्याण की कामना करता था।^{१४} (अथर्ववेद १/३१/४) ईश्वर की स्तुति द्वारा वह अपने साथ—साथ पिता द्वारा किये गये पापों से भी मुक्ति की याचना करता था। (ऋग्वेद ७/८६/५) वेद के परवर्ती युग उपनिषद काल में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है।

कठोपनिषद् का दृष्टान्त है वाजश्रवस ऋषि का पुत्र नचिकेता जब देखता है कि उसके पिता दूध देने में असमर्थ बूढ़ी गायों को दान कर रहे हैं तब वह व्यथित होकर सोचता है कि ऐसे निकृष्ट दान से मेरे पिता कहीं यजुर्वेद के **अन्धेन तमसावृता**^{१५} के अनुसार निम्न गति को प्राप्त न हो जायें, इसलिये वह बीच में ही टोक कर कहता है कि हे पिता मुझे किसे दोगे? पिता के चुप रहने पर और नचिकेता के बार—बार कहने पर पिता वाजश्रवस क्रोधित होकर बोले कि तुझे यम को दूंगा। अपने पिता की आज्ञा का पालन करते हुए नचिकेता यमलोक चला गया अपनी अनुपस्थिति में तीन दिन मे से भूखे प्यासे नचिकेता को यम ने अतिथि मानकर तीन वरदान दिये। पहले वरदान में नचिकेता ने यही मांगा, कि मेरे यहां आने से पिता दुखी न हो तथा मेरे लौटने पर मुझे पहचान कर पहले की भांति प्रेम से व्यवहार करें। यह थी एक पुत्र की पिता के प्रति मंगल कामना।

उपनिषद् काल की भांति वेद के युग में भी कर्मशीलता और दानशीलता का मानवीय मूल्यों में विशेष स्थान था वेद का ऋषि कहता है कि सैंकड़ों हाथों से अर्जन करो और सहस्रों हाथों से दान करो।^{१६}क ऋग्वेद के दसवें मण्डल का एक सौ सत्रहवा सूक्त है। नीति शास्त्र में भी धन की दान भोग एवं विनाश—तीनों गतियों का उल्लेख है।^{१६} आज विश्व में धन के सम्पादन और संवर्धन की होड़ है। बुद्धिवादी वर्ग के मस्तिष्क आज यजुर्वेद ३०/३ के **विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।** को भुलाकर **दुरितो** अर्थात् बुराइयों का ही नित्य अविष्कार कर रहे हैं। कपड़ों का उत्पादन बढ़ रहा है पर रूझान नग्नता की ओर है। घोषणा विश्व शान्ति की है, पर तैयारियाँ विश्व विध्वंस की हैं। आज असत् पृथ्वी लोक से उठ कर द्यौलोक को छू रहा है। सत् का दर्शन तक दुर्लभ है।^{१७} न जाने हम कब से **सत्यमेव जयते नानृतम्.... धर्म एव जयति नाधर्म** के नारे लगा रहे हैं किन्तु असत्य और अधर्म दोनों ही मानवीय मूल्यों का क्षरण करते हुए विश्व व्यापी होकर वियज श्री प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय कालिजा में लड़के लड़कियों के एक से परिधान, हिप्पियों जैसी केश सज्जा, नाच, क्लब, व्यसन, विलास, धूम्रपान, मदिरापान सब पश्चिमीकरण की देन हैं। देश में हर वर्ष सिगरेट की १२१४३

करोड़ की बिक्री हो रही है। मदिरा का बाजार भी ८८०६ करोड़ का है। सिर्फ तम्बाकू की वजह से गत वर्ष ४८ लाख मौतें हुईं। सिगरेट शराब दोनों मिलकर कैंसर को जन्म दे रहे हैं। उचित तो यह होगा कि हर वर्ष देश के लाखों लोगों की जान लेने वाले शराब एवं तम्बाकू की कम्पनियों के मालिकों के विरुद्ध हत्या का मुकदमा दर्ज हो।

स्वतः ही अपने मानवीय मूल्यों का विनाश करने वाले हम लोगों ने उस आनन्द के श्रोत मोक्ष प्रदान करने वाले (ऋग्वेद ६/११३/११) परमपिता को भुला दिया है किन्तु जीवन के चिरन्तन सत्य इस मृत्युरूपी संसार सागर को पार करने के लिये उस आदित्य वर्ण को जानने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है।^{१८} वेदों में वर्णित ब्रह्म—दर्शन के श्रेय मार्ग को त्याग कर हमने चार्वाक दर्शन^{१९} का प्रेय मार्ग अपनाया है। आसुरी उपनिषद् के वाममार्गी व्यभिचारी आचार्यों का हम अनुसरण करने लगे हैं। वाममार्गी कालीतन्त्र में लिखा है कि 'म' अक्षर से आरम्भ होने वाली वस्तुएँ मोक्षदायी हैं^{२०} जैसे मद्य, मांस, मछली, मुद्रा (धन) मैथुन और मदिरा के लिये लिखा है कि जो मदिरापान करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता।^{२१} नवम्बर २००६ के **हिन्दुस्तान** दैनिक पत्र में बड़े आकर्षक ढंग से एक सूचना प्रकशित थी कि **मेघालय में मदिरा महोत्सव** बताइये जहां मदिरा के नाम पर महोत्सव रचाये जाते हों वहां वेद मन्त्रों की अवमानना कर^{२२} आदर्श मानवीय मूल्यों की बात करना व्यर्थ है। वस्तुतः आज भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व ही व्यसनों और विलासों की रंगभूमि बन गया है।

ऋग्वेद (१०/५/६) में लिखा है कि गरुड़ के समान घमण्ड, गीध के समान लोभ, कोक (चिड़ा) के समान काम, कुत्ते के समान मत्सर, उलूक के समान मोह (मूर्खता) और भेड़िये के समान क्रोध को मार भगाइये, अर्थात् अभिमान, लोभ, काम, मत्सर, मोह क्रोध इन षट्‌विकारों को नष्ट कीजिये^{२३} ऋग्वेद में जुआ,२४ व्यभिचार एवं चोरी जारी^{२५} से बचने का पूर्णतया निर्देश है। आज ऐसे बहुत से व्यक्ति कहते हुए मिलते हैं कि हमने थोड़ी सी चोरी कर ली तो क्या हुआ, भगवान् कृष्ण भी तो चोर थे। अपनी सम्यता संस्कृति और संस्कार को भुलाकर आज बुद्धिजीवी मानव ने उन्नति के नाम पर प्रकृति को विकृत कर दिया है। जंगलों को काटकर वायु को दुर्गन्धित कर दिया है। शिकार खेलकर सृष्टि को अस्वभाविक बना दिया है, मनुष्य अनेक रोगों से पीड़ित है पागलपन बढ़ रहा है। आत्म हत्यायें दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती हैं। मनुष्य को तो यह सोचना चाहिये कि अपनी विवेकशीलता और धार्मिक प्रवृत्ति के कारण वह समस्त सांसारिक प्राणियों में श्रेष्ठ है। कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने भी अपने काव्य में लिखा है **मानव तुम सबसे सुन्दरतम** अतः मनुष्य मनुष्य ही बना रहे^{२६} वह अज्ञान रूपी अन्धकार में न डूबकर^{२७} प्रकाश की ओर बढ़ते हुए जगतपिता परमात्मा के उस द्वार तक पहुँचने के लिये प्रयत्नशील हो (अथर्ववेद ८/१/१६) जो श्रद्धा की कंकरीट और विश्वास के सीमेन्ट से बना हो और जिसे संकल्प ने दृढ़ता प्रदान की हो।

हमें गर्व है कि हमारे वैदिक ऋषियों ने वेद के युग की सम्यता, संस्कृति और संस्कारों को श्रद्धा विश्वास और संकल्प की दृढ़ता से युगों युगों तक के लिये अमरत्व प्रदान किया। उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्य एक कालिक व एक देशीय नहीं अपितु सार्वभौम एवं सर्वकालिक हैं। मानवीय मूल्यों का उचित रूप से मूल्यांकन करने के लिये जिन विभिन्न मापदण्डों की आवश्यकता है वे वैदिक वाङ्मय में सर्वत्र विद्यमान है। वेद तो भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति और सम्यता आदि के ही उद्गम स्थल नहीं हैं अपितु सार्वभौम आदर्श मानवीय मूल्यों के भी आधारभूत ग्रन्थ हैं।

सार्वदेशिक सभा के पूर्व कार्यकर्ता श्री जयनारायण शर्मा जी की पुत्रवधु श्रीमती प्रीति शर्मा का असयम निधन



विहार फेस—3, दिल्ली—110096 पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसे आर्य समाज प्रीत विहार के धर्माचार्य श्री विष्णु शास्त्री जी ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को उत्तम गति एवं शांति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति, धैर्य एवं आत्मबल प्रदान करें।



सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें



आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :-
www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अविवरण की दशा में लौटें :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पृष्ठ 1 का शेष

शिविर का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विठ्ठलराव आर्य एवं समापन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ शिविर की अध्यक्षता बहन पूनम आर्या, व्यवस्था बहन प्रवेश आर्या एवं संयोजन युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने किया



इसके उपरान्त युवा संकल्प एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश ने की, जबकि आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट मुख्य अतिथि रहे।

इस अवसर पर आचार्या डॉ. सूर्यादेवी जी ने कहा कि आर्य समाज ने बेटियों को शिक्षा और आत्मसम्मान का अधिकार दिलाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है तथा गुरुकुलों से निकली अनेक बेटियों ने वेदों का गहन अध्ययन कर समाज में नई पहचान स्थापित की है।

पद्मश्री आचार्या डॉ. सुकामा जी ने कहा कि संस्कार ही जीवन का वास्तविक आधार हैं तथा संस्कारित बेटियाँ सुंदर, स्वस्थ और सशक्त समाज का निर्माण करती हैं।

स्वामी सूर्यवेश जी ने स्वामी इन्द्रवेश जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बताया कि स्वामी जी उनके दीक्षा गुरु और प्रेरणास्रोत थे। उन्होंने हमारे जैसे अनेकों नवयुवकों को आर्य समाज के लिए जीवन दान देने की प्रेरणा दी।

प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री वेदपाल आर्य-सनौली, बागपत ने भी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश जी युवाओं में राष्ट्रभावना, अनुशासन और संस्कार जागरण के प्रेरणास्रोत रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानंद एडवोकेट ने स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज को युवक क्रांति अभियान का जनक बताते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा से हजारों युवाओं ने समाज निर्माण का मार्ग अपनाया।



बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि उनका सामाजिक जीवन स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रेरणा से ही प्रारम्भ हुआ।

इस अवसर पर पूर्व विधायक चौ. अजीत सिंह एडवोकेट, श्री हवा सिंह एडवोकेट पिलानी, राजस्थान, श्री रामनिवास आर्य-नारनौल एवं स्वामी विजयवेश जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली विभूतियों को "स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान" से सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने वालों में स्वामी सूर्यवेश (बिजनौर), आचार्या डॉ. सूर्यादेवी (कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान), पद्मश्री आचार्या डॉ. सुकामा (कन्या गुरुकुल, रुड़की), वेदपाल आर्य (आर्य भजनोपदेशक, सनौली, बागपत), श्री कमलेश शर्मा-मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं श्री विकास आर्य (जयपुर), श्री जगफूल सिंह दिल्ली (जींद), श्री सुरेंद्र यादव (रेवाड़ी), स्वामी मुक्तानंदा (खेड़ला, गुरुग्राम), कु0 पूनम आर्या (निंदाना, रोहतक), कुमारी निधि आर्या (इस्माइला, रोहतक), चौधरी बदलूराम आर्य (मुकलान) तथा डॉ. प्रकाशवीर दलाल (रोहतक) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम के अंत में सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या ने सभी अतिथियों, प्रशिक्षकों, सहयोगियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।

शिविर के समापन पर 500 कन्याओं ने यज्ञ के माध्यम से राष्ट्र, संस्कृति एवं समाज सेवा का संकल्प लिया। सम्पूर्ण शिविर का वातावरण योग, अनुशासन, वैदिक संस्कृति, राष्ट्रभक्ति और नारी सशक्तिकरण की भावना से ओत-प्रोत रहा। शिविर के दौरान सर्वश्री प्रि. महेन्द्र सिंह शास्त्री, डॉ. रणवीर सिंह खासा, श्री संसार सिंह मलिक, श्री जयकरण आर्य, प्रो. विपिन गुप्ता, श्री वेद प्रकाश आर्य-मंत्री गुरुकुल सिंहपुरा, श्री दलबीर सिंह आर्य-प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री मनीराम गोयल-हिसार, डॉ. सुमेर सिंह-नारनौल, श्री बाबूलाल आर्य-भिवानी, मा0 नफेसिंह-रिठाल, श्री विनोद हुड्डा, श्री नफे सिंह आर्य-फरमाणा, श्री जयपाल आर्य, श्री राजेश आर्य, श्री मनोज पहलवान व श्री सत्यवीर भोला-फरमाणा, पं. रमेशचन्द्र शास्त्री-जीन्द, श्री महावीर शास्त्री व श्री बलवीर सिंह शास्त्री-रोहतक, स्वामी सोम्यानन्द, श्रीमती मूर्ति देवी, श्री महावीर

सिंह ठेकेदार आदि का भी विशेष सहयोग रहा।

शिविर की व्यवस्था में युवती परिषद् की प्रांतीय अध्यक्ष कुमारी मुकेश आर्या, श्रीमती सुषमा आर्या-रोहतक, श्रीमती शोला, श्रीमती नीलम, कुमारी अंजलि आर्या, श्रीमती मंजू मलिक, श्रीमती कविता, कुमारी पूनम आर्या-टिठौली, श्रीमती रश्मि आर्या, श्रीमती बबिता आर्या, श्रीमती सुमित्रा आर्या, श्रीमती रोशनी आर्या, श्री शकुन्तला आर्या, श्रीमती सुदेश, श्रीमती प्रीति आर्या, कुमारी पूजा आर्या, कुमारी रानी आदि ने अपना पूरा समय देकर शिविर में योगदान दिया।

समापन समारोह में सर्वश्री सज्जन सिंह राठी, मा0 अजीतपाल, श्री अशोक आर्य, मा0 प्रदीप कुमार, श्री जितेन्द्र, श्री अजयपाल आर्य, श्री साहिल आदि का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा। शिविर एवं संकल्प समारोह बड़े उत्साह के वातावरण में महर्षि दयानन्द जी के जय के नारों के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर के लिए विशेष रूप से श्री चन्द्रभान आर्य एवं बहन लक्ष्मी आर्या, डॉ. बृजेश गुप्ता एवं श्रीमती राजेश्वरी आर्या श्रीमती गीता, श्री आरिश साहनी, योगाचार्य वैद्य रमेश जी, श्री योगेन्द्र मलिक-पानीपत, डॉ. कीर्ति दहिया, श्री मनमोहन गोयल, श्री जगमोहन मिश्र, प्रो. विठ्ठलराव आर्य, श्री लक्ष्मीनारायण आर्य (जिन्दल परिवार के प्रतिनिधि), श्री राज सिंह आर्य, श्री अजय कुमार एवं श्रीमती विनीता, डी.एस.पी. श्री अर्जुन सिंह आदि का विशेष आर्थिक सहयोग रहा।



प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)

सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मंत्री) मो.0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतेक्यता होना अनिवार्य नहीं है।